

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम

उम्र उजाला

दिनांक 29. 5. 2019 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 6-8

किसानों को ज्वार की खेती करने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत : डॉ. दिनेश एचएयू में अखिल भारतीय अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं बैठक

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक हुई। बैठक हक्कि के आनुबंधिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिल्लट रिसर्च हैदराबाद के सहयोग से हुई। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार ने इसका उद्घाटन किया।

उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाए जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा विभिन्न चारा फसलों विशेषकर ज्वार की उन्नत किस्में विकसित करके इनका उत्पादन बढ़ाने में कृषि महाविद्यालयों ने बहुत उम्दा कार्य किया है, लेकिन ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट चिंता की बात है। एक तरफ जहां ज्वार पशुओं के लिए चारा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है, वहीं दूसरी तरफ उद्योग में भी इसकी मांग बढ़ रही है। इस परिस्थिति में किसानों को ज्वार की खेती के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ज्वार की पौष्टिक और अधिक उत्पादन क्षमता बाले संकर विकसित करने की आवश्यकता है।

नेशनल सीइस कार्पोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डॉ. विनोद गौड़ ने



एचएयू में वैज्ञानिकों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि डॉ. दिनेश कुमार व अन्य।

कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदानी दोगुना करने का जो लक्ष्य रखा है, उसे पूरा करने में ज्वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती हैं। सरकार ज्वार जैसे मोटे अनाज वाली फसलों को ज्यादा पौष्टिक बनाए जाने पर केंद्रित कर रही है, इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है।

भारतीय कंधन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डॉ. विलास ए. तोपनी ने इस परियोजना की वर्ष 2018-19 की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुणा से अधिक बढ़ि हुई है। फिलहाल देश में कंधन का कुल उत्पादन करीब 17 मीट्रिक टन है, जिसको बढ़ाकर 30 मीट्रिक टन करने की जरूरत है। इसके लिए इन

फसलों के क्षेत्र में और गिरावट को रोकने के साथ ज्वार की ज्यादा पौष्टिक और संकर किस्मों के विकास पर जोर दिया गया है। आगामी तीन साल में किसानों को बेहतर संकर मिलने की आशा है। हक्कि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहायत ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हेक्टेयर भूमि में ज्वार की काशत की जा रही है। इस क्षेत्र में और बृद्धि की संभावना नहीं है, इसलिए इसकी पैदावार केवल उन्नत किस्मों से संभव है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किस्में विकसित की हैं, जो किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं। समारोह को डॉ. प्रभाकर भट्ट, डॉ. केएस ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। इस दौरान परियोजना के अकोला, कोयंबटूर और पंत नगर केंद्रों के साथ ज्वार फसल पर श्रेष्ठ अनुसंधान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल आठ वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम पंजाब कृषि संस्कृति

दिनांक 29.5.2022 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 1-5

मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की सम्भावना : गौड़

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक शुरू

हिसार, 28 मई (ब्लूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिल्लिट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है, जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के ए.डी.जी. (खाद्य एवं चारा फसलें) दा. दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया। उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाए जाने पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि एवं नेशनल सीईस कार्यालय के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डा. बिनोद गौड़ ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदानी दोगुना करने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा करने में ज्वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती हैं।

भारतीय केंद्र अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

के निदेशक एवं उपरोक्त अनुसंधान परियोजना के समन्वयक डा. बिलास ए. तोपती ने इस परियोजना की वर्ष 2018-19 की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुना से अधिक वृद्धि हुई है। हकूमि के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्वार की काशत की जा रही है। इस क्षेत्र में और वृद्धि की सभावना नहीं है इसलिए इसकी पैदावार के बल उत्पत्ति किसी से संभव है। उन्होंने कहा इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किसिमें विकसित की हैं जो किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं।

समारोह को उपरोक्त परियोजना के पूर्व समन्वयक डा. प्रभाकर भट्ट और एप्रीकल्चर कालेज के डीन डा. के.एस. ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। मंच पर पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष एवं इस बैठक के संयोजक डा. आई.एस. पंवर भी उपस्थित थे। इस मौके



मुख्यातिथि वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए। पर आई.आई.एम.आर, हैदराबाद और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ज्वार फसल पर प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन किया गया। इनके अतिरिक्त उपरोक्त परियोजना के अकोला, कोयम्बटूर और पंतनगर केन्द्रों के साथ-साथ ज्वार फसल पर ब्रेष्ट अनुसंधान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल 8 वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम द्वारा : भूमि
दिनांक २१.५.२०१९ पृष्ठ सं. १४ कॉलम ३०४

कम इनपुट वाली फसलें कर सकती है किसान की इंकल डबल

ज्वार की चारे के अलावा उद्योगों में बढ़ एही डिमांड

■ हृषीकृष्ण में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 49वीं समूह की बैठक का आयोजन

हाईग्रेड व्यूज भविष्य

एवं चारा फसलें ढाँ, दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया। उन्होंने कहा एक तरफ जहां ज्वार पशुओं के लिए चारा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है वहीं उद्योग में भी इसकी मांग बढ़ रही है।

हृषीकृष्ण में आज तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना की 49वीं समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इंडियन ईंस्टिट्यूट ऑफ मिल्लिट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी खाद्य



हिसार। पुस्तक का विमोचन करते मुख्य अतिथि।

से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने बार पर अखिल भारतीय अनुसंधान परियोजना के तहत अब तक हुए अनुसंधानों की प्रशंसा की।

65 फीसदी गिरावट के बावजूद तीन गुणा उत्पादन

हैदराबाद के निदेशक एवं उपरोक्त अनुसंधान परियोजना के समन्वयक डॉ. विलास ए. तोपनी ने इस परियोजना की वर्ष 2018-19 की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुण से अधिक वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा

फिलहाल देश में कंधन का कुल उत्पादन करीब 17 मीट्रिक टन है जिसको बढ़ाकर 30 मीट्रिक टन करने की जरूरत है। इसके लिए इन फसलों के क्षेत्र में और गिरावट को रोकने के साथ बार की ज्यादा पैटिक और संकर किसी के विकास पर जोर दिया गया है। आगामी तीन साल में किसानों को बेहतर संकर मिलने की आशा है।

3.91 लाख हैक्टेयर ने ज्वार की काश्त

हृषीकृष्ण के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस के सहायता ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्वार की काश्त की जा रही है। इस क्षेत्र में और बृद्धि की संभावना नहीं है इसलिए इसकी पैदावार केवल

उन्नत किसी से संभव है। उन्होंने कहा इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किस्में विकसित की हैं जो किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं।

तीन पुस्तकों का विमोचन

समारोह को उपरोक्त परियोजना के पूर्व समन्वयक डॉ. प्रभाकर भट्ट और एशियाकल्चर कालेज के डीन डॉ. कैंपस ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। मंच पर पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष एवं इस बैठक के संयोजक डॉ. आईएस पवार भी उपस्थित थे। इस मौके पर आई आई एम आर, हैदराबाद और हृषीकृष्ण के वैज्ञानिकों द्वारा बार फसल पर प्रकाशित क्रमशः तीन और एक पुस्तकों का विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम फैन कॉम्पानी
 दिनांक २९.५.२०१९ पृष्ठ सं. ५ कॉलम ३-६

उत्तराखण्ड प्रशासन

बिना पेस्टीसाइड के भी चारा उगा सकते हैं किसान फिर भी जहरयुक्त चारा खा रहे हमारे दुधारू पशु ऐसे पशुओं से मिलने वाले प्रोडक्ट भी सेहत के लिए हानिकारक

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में मंगलवार को तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की ४९वीं समूह बैठक हुई। इसमें हैदराबाद की इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिल्लिटरी रिसर्च सहित देशभर से वैज्ञानिक एकत्रित हुए। यहां वैज्ञानिकों ने बताया कि खेतों की पेस्टीसाइड का प्रयोग करना किसान की आदत में आ चुका है। चारा की फसल में पेस्टीसाइड का प्रयोग न के बराबर किया जाता है, इसके बावजूद खेतों में पेस्टीसाइड ढाला जा रहा है। यह पशु ही नहीं लोगों के स्वास्थ्य के



एचएयू में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की ४९वीं समूह बैठक में उपस्थित वैज्ञानिक।

लिए भी बहुत हानिकारक है। इस कॉन्फ्रेंस में क्योंकि इन पशुओं से मिलने वाले प्रोडक्ट में पेस्टीसाइड का असर साफ दिखाई देता है। इसलिए यह दल किसानों को विभिन्न राज्यों में जाकर चारा फसलों में पेस्टीसाइड का प्रयोग न करने के बारे में

बता रहा है। इस कॉन्फ्रेंस में विवि का आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग भी शामिल रहा। इसमें मुख्य रूप से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम

सैनिक जागरण

दिनांक २१.५.२०१७

पृष्ठ सं. ५ कॉलम ६-७

हरियाणा में चारा उत्पादन की 40 फीसद कमी, दक्षिण भारत से बीज तैयार होकर जा रहा पाकिस्तान

संदीप विश्नोई, हिसार

देश में सात राज्य ऐसे हैं, जहां जरूरत के अनुसार पशुओं के चारे का उत्पादन हो रहा है, लेकिन हरियाणा जैसे हरित प्रदेश में इसका उत्पादन आवश्यकता से 40 फीसद कम है। इसका मुख्य कारण बीज उपलब्ध न होना है। इसकी वजह यह है कि ज्वार के बीज का उत्पादन दक्षिण में होता है और फिर यह उत्तर से होते हुए पाकिस्तान और बांग्लादेश चला जाता है। यह कहना है इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च हैदराबाद के निदेशक डा. विलास ए तोनापी का। वह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय सम्मिन्त अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक के दौरान पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे।

डा. तोनापी ने कहा कि ऐसा नहीं है

किसान बीज का खुद करें उत्पादन

डा. तोनापी ने कहा कि हरियाणा के किसान भी गुणवत्ता वाले बीज का उत्पादन करें। बस जरूरत सरकार के प्रोत्साहन की है। सरकार नेटवर्किंग शुरू करे और इसके लिए पहल करे। यह हरियाणा के किसानों के लिए एक अवसर भी है। इससे पहले एक जरूरत यह है कि किसानों को उच्चकोटि की वैरायटी से रुबरु कराया जाए।

अब न्यूट्रिशनल सिक्योरिटी के साथ चारा फसलों पर भी फोकस नेशनल सीडीस कारपोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डा. विनोद गौड़ ने कहा कि सरकार ज्वार जैसे मोटे अनाज वाली फसलों को ज्यादा पौष्टिक बनाए जाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है, इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने बताया कि पहले हमारा ध्यान फूड सिक्योरिटी पर था, लेकिन अब यह न्यूट्रिशनल सिक्योरिटी पर हो गया है।

कि बीज की कमी दूर नहीं हो सकती, बस नेटवर्किंग की जरूरत है। सरकार इसके लिए पहल करे, नेटवर्क बनाए और बताए कि बीज की कितनी डिमांड है, उसके मुताबिक उत्पादन किया जाए।

यह संगोष्ठी विवि के आनुवंशिकी प्रबंध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिल्लेट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम भूमि
दिनांक २४.५.२०१९ पृष्ठ सं. ६ कॉलम १-६

ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट चिंता की बात : कुमार

हिसार/28मई/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज तीन दिवसीय अधिकारी भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुबंधिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिल्लिट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया। उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाए जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा विभिन्न चारा फसलों विशेषकर ज्वार की उन्नति किसमें विकसित करके इनका उत्पादन बढ़ाने में कृषि महाविद्यालयों ने बहुत उम्दा कार्य किया है परन्तु ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट चिंता की बात है। उन्होंने कहा एक तरफ जहाँ ज्वार पशुओं के लिए चारा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है वहीं दूसरी तरफ उद्योग में भी इसकी मांग बढ़ रही है। इस परिस्थिति में किसानों को ज्वार की खेती के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ज्वार की पौष्टिक और अधिक उत्पादन क्षमता वाले संकर विकसित करने की जरूरत है। नेशनल सीइस कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डॉ. विनोद गौड़ जोकि इस

अवसर पर विशिष्ट अंतिथि थे, ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदानी दोगुणा करने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा करने में ज्वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती हैं। उन्होंने कहा सरकार ज्वार जैसे मोटे अनाज वाली फसलों को ज्यादा पौष्टिक बनाए जाने पर ध्यान केन्द्रित कर रही है इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने ज्वार पर अब तक हुए अनुसंधानों की प्रशंसा की।

भारतीय कंधन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक एवं उपरोक्त अनुसंधान परियोजना के समन्वयक डॉ. विलास ए तोपनी ने कहा कि ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुण से अधिक वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा फिलहाल देश में कंधन का कुल उत्पादन करीब 17 मीट्रिक टन है जिसको बढ़ाकर 30 मीट्रिक टन करने की जरूरत है। इसके लिए इन फसलों के क्षेत्र में और गिरावट को रोकने के साथ ज्वार की ज्यादा पौष्टिक और संकर किसिमों के विकास पर जोर दिया गया है। आगामी तीन साल में किसानों को बेहतर संकर मिलने की आशा है। हकूमि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने



कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्वार की काशत की जा रही है। इस क्षेत्र में और वृद्धि की संभावना नहीं है इसलिए इसकी पैदावार केवल उन्नत किसिमों से संभव है। उन्होंने कहा इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ज्वार फसल पर प्रकाशित क्रमशः तीन और एक पुस्तकों का विमोचन किया गया। इनके अतिरिक्त उपरोक्त परियोजना के अकोला, कॉर्यबद्ध और पंतनगर केन्द्रों के साथ-साथ ज्वार फसल पर ब्रेष्ट अनुसंधान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल आठ वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम

सिटी पल्स

दिनांक २४.५.२०१९ पृष्ठ सं. २ कॉलम १-५

हृषि में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना पर संगोष्ठी का आयोजन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की ४९वीं समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के अनुबोधितों एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इण्डियन ईम्पर्टट्रूट और मिल्लत रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीनी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया।

उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को खाद्य जाने पर बत दिया। उन्होंने कहा विभिन्न चारों फसलों विशेषज्ञ ज्वार की उत्पत्ति किसमें विकसित करके इनका उत्पादन बढ़ाने में कृषि महाविद्यालयों ने बहुत उम्मीद करते हुए है परन्तु ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट रिता की जात है। उन्होंने कहा एक तरफ जहां ज्वार पश्चात्तें के लिए चाहा आवृत्ति के लिए महावर्षीय है वही दूसरी तरफ उत्पादन में भी इसकी मांग बढ़ रही है। इस परिस्थिति में किसानों की ज्वार की खेती के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ज्वार की पर्याप्ति और अधिक उत्पादन क्षमता



हिसार। उत्पादन समारोह में मुख्य अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार एवं अन्य पुस्तक का विमोचन करते हुए।

वाले संकर विकसित करने की आवश्यकता है।

नेशनल सीर्ज कार्बोरेलन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डॉ. विनेद मौड जोकि इस अवसर पर विशिष्ट अधिकारी थे, ने कहा कि सकारात्मक विकास के लिए ज्वार की उत्पादन नहीं है। इस क्षेत्र में और बृद्धि की संभावना नहीं है। इसलिए इसकी पैदावार के बाल उत्पत्ति किसी से संभव नहीं है।

फसलें बहुत उत्पन्नी हो सकती हैं।

हृषि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. केशव ने कहा कि हरियाणा में ३.९१ लाख हैक्टेएर भूमि में ज्वार की कालत की जा रही है। इस क्षेत्र में और बृद्धि की संभावना नहीं है। इसलिए इसकी पैदावार के बाल उत्पत्ति किसी से संभव नहीं है।

समारोह को उपरोक्त परियोजना के पूर्व सम्बन्धित डॉ. प्रभाकर भट्ट और

एक्षिकल्पकर कालोनी के डॉ. केएस श्रेष्ठ ने भी संबोधित किया। यंत्र पर पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष एवं इस बैठक के संबोधक डॉ. आई.एस. पंकर भी उपस्थित थे। इस मैट्टे पर आई आई एम डॉर, हैदराबाद और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ज्वार फसल पर प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम

दिनांक २८.५.२०१९ पृष्ठ सं. ३ कॉलम २५

निपट २१५८२

मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना : गौड़

हिसार, 28 मई (विस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समानित अनुसंधान परियोजना (न्यार) की 49वीं समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पीथ प्रबन्धन विभाग के द्वारा

अखिल भारतीय समानित अनुसंधान परियोजना (ज्यार)
की 49वीं समूह बैठक आरंभ

अनुभाग हारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के इन्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिल्सट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के एटोडी (साथ एवं ज्यादा फसलों) डॉ. दिनेश कुमार ने उत्पादन किया। उन्होंने देश में ज्यादा फसल के अंतर्गत सेत्र को बढ़ाए जाने पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि विभिन्न जाति का विभिन्न ज्यादा फसलों को ज्यादा पोटिक बनाए जाने पर केन्द्रित कर रखी है इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार को और से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने ज्यादा पर अखिल भारतीय अनुसंधान



उन्होंने कहा एक तरफ जहाँ ज्यादा यानुभागों के लिए चारों आर्थिकों के लिए महत्वपूर्ण है वहाँ दूसरी तरफ उत्तरों में भी इसकी मंग बढ़ रही है। इस परिस्थिती में किसानों को ज्यादा की सेवा के लिए प्रत्यावहित करने के साथ ज्यादा ज्यादा योटिक और अधिक उत्पादन क्षमता बढ़ाने सकत विकासित करने की आवश्यकता है।

नीलगंग झोइस कार्योरकान के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निरेशक डॉ. विनोद गौड़ जोकि इस अध्यार पर विशिष्ट अधिकारी है, ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों को आमदानी दोगुना करने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा करने में ज्यादा जैसी कम इनपुट अवश्यकता बही फसलें बढ़ात उपयोगी हो सकती हैं। उन्होंने कहा सरकार ज्यादा जैसे भोटे अनाज बही फसलों को ज्यादा पोटिक बनाए जाने पर केन्द्रित कर रखी है इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार को और से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने ज्यादा पर अखिल भारतीय अनुसंधान

परियोजना के तहत अब तक हुए अनुसंधानों की प्रशंसा की।

भारतीय कंघन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निरेशक एवं उपरोक्त अनुसंधान परियोजना के समन्वयक डॉ. विलास ए. गोपनी ने इस परियोजना की वर्ष 2018-19 की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्यादा के अंतर्गत सेत्र में कीटों 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुण से अधिक वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा फिलहाल देश में कंघन का कुल उत्पादन कीमत 17 प्रोटिक टन है जिसके बदाकर 30 प्रोटिक टन करने की जरूरत है। इसके लिए इन फसलों के सेत्र में और गिरावट को रोकने के साथ ज्यादा की ज्यादा पोटिक और संकर किसानों के विकास पर जोर दिया गया है। आगामी तीन साल में किसानों को बेहतर संकर मिलने की भविता है।

हृति के अनुसंधान निरेशक डॉ. एस के सहयोग ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्यादा की कास्त की जा रही है। इस सेत्र में और वृद्धि की

संभावना नहीं है इसलिए इसकी ऐदाबाद के बाल उत्तर किसीसे संभव है। उन्होंने कहा इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किसीसे विकासित की है जो किसानों में बहुत ही कामिय है। समारोह की उपरोक्त परियोजना के पूर्व समन्वयक डॉ. प्रभाकर भट्ट और एटीकल्चर कलेज के दोनों डॉ. के.एस. देवाल ने भी संबोधित किया। मंच पर पीथ प्रबन्धन विभाग के अध्यक्ष एवं उपरोक्त ज्यादा के संयोजक डॉ. आई.एस. पंवार भी उपस्थित थे।

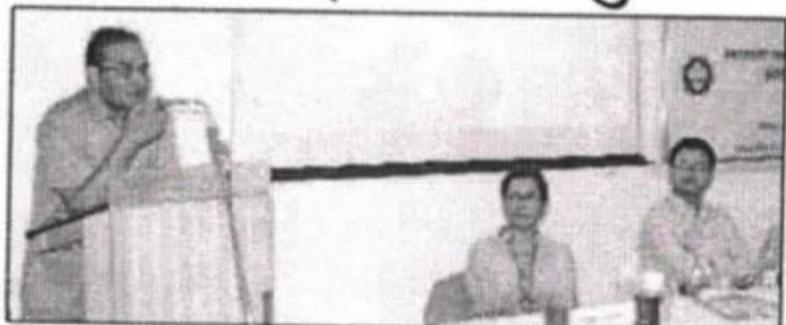
इस भीके पर आईआईएमआर, हैदराबाद और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ज्यादा फसल पर प्रकाशित छंगम: तीन और एक पुस्तकों का विमोचन किया गया। इनके अतिरिक्त उपरोक्त परियोजना के अकोला, कोयबद्द और पंतनगर केन्द्रों के साथ-साथ ज्यादा फसल पर सेत्र अनुसंधान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल आठ वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम पा३ का४६
दिनांक २८.५.२०१९ पृष्ठ सं. ३ कॉलम २-४

अंतरराष्ट्रीय बाजार के नियमों को समझकर किसान उठाएं ज्यादा मुनाफा

हिसार, 28 मई (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में प्रोड्युस सेफटी एलान्स ग्रीवर ट्रेनिंग एंड गुड एग्रीकल्चरल प्रेक्टिसस विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला अमेरिका के लुसियाना स्टेट विश्वविद्यालय के एजी सेंटर के सहयोग से आयोजित की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को कृषि उत्पाद दूसरे देशों में भेजने की बारिकियां सीखाना व प्रोत्साहित करना था। इस कार्यशाला में हरियाणा के विभिन्न जिलों से आए किसानों ने भाग लिया। कार्यशाला में कुलपति प्रो. के.पी. सिंह मुख्य अतिथि थे। प्रो. सिंह ने कहा कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सेंटर की स्थापना की गई है जिसमें किसानों को अपने उत्पाद की पैकेजिंग, भंडारण, परिक्षण, विश्लेषण की प्रक्रिया, आयात-निर्यात के बारे में जानकारी दी जाएगी। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय स्तर की केमिकल टेस्टिंग लैंब उपलब्ध है जो किसानों के उत्पाद में रासायन की प्रतिशत उपलब्धता को बता सकती है। जिससे



किसान अपने उत्पाद को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बिना रोक टोक के बेच सकता है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय बाजार को प्रक्रिया पर समग्र सिफारिशों विकसित करने की ज़रूरत पर जोर दिया। कुलपति ने कहा कि हरियाणा के किसान बहुत मेहनती व जागरूक हैं। उन्होंने वैज्ञानिक सलाह व तकनीकी सहायता से अपने उत्पाद को बढ़ाने में सफलता हासिल की है। लेकिन बाजार की सही समझ न होने से अपने उत्पाद का सही बाजार मुख्य प्राप्त करने में असमर्थ है। उन्होंने कहा कि उत्पादकता में हम आत्मनिर्भर हो गए हैं पर किसान को सही कीमत न मिलना एक बड़ी समस्या है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय बाजार के नियमों को

समझकर अपने उत्पाद को दूसरे देशों में भेजकर अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। अमेरिका के लुसियाना स्टेट विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, डॉ. अच्युत अधिकारी ने बताया कि यह कार्यशाला प्रोड्युस सेफटी एलान्स ग्रीवर ट्रेनिंग एंड गुड एग्रीकल्चरल प्रेक्टिसस विषय पर आयोजित की गई एशिया में पहली कार्यशाला है। उन्होंने बताया कि ताजे फल व सब्जियों को खुराक होने से पहले उचित मुख्य पर उपभोक्ता के पास पहुंचना अत्यंत आवश्यक है। इस अवसर पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, कुलपति के विशेष सलाहकार, डीन, डायरेक्टर, विभागाध्यक्ष व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।